28 फरवरी, 2010 को 12.30 बजे श्री कृष्णा मैमोरियल हाल, नार्थ गांधी मैदान में बाबू राजेन्द्र प्रसाद की 125वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव तथा उनकी 47वीं पुण्य तिथि के अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

भारत के महानतम सपूतों में से एक बाबू राजेन्द्र प्रसाद की 125वीं जयंती के स्मरणोत्सव के अवसर पर आयोजित आज के समारोह में भाग लेकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। आज उनकी 47वीं पुण्यतिथि भी है। यह उचित ही है कि बिहार सरकार ने इस समारोह का आयोजन किया है और इस अवसर पर एक संस्मारक सिक्का जारी किया है।

जयन्ती तथा पुण्य तिथि हमें उन बड़े राजनीतिक और नैतिक मुद्दों के संबंध में उनके विचारों तथा कार्यों का गहरा मंथन करने का अवसर प्रदान करती हैं जिन्होंने उनके समय में राष्ट्र को आंदोलित कर रखा था। किसी भी रूप में हो यह काम इतिहास, अतीत-मोह या दर्शन का नहीं हैं। आज के समाज और राज्य-व्यवस्था में भी ये मुद्दे प्रासंगिक बने हुए हैं।

इसके अतिरिक्त राजेन्द्र बाबू ने राजनीति के लिए आवश्यक गांधी आचार नीति प्रस्तुत की। वह स्वयं सादगी तथा नि:स्वार्थ सेवा के प्रतीक थे। उनकी व्यक्तिगत जीवन शैली और सत्यनिष्ठा उनके सर्वोत्तम गुण थे। इसी कारणवश उन्हें "भारतीय राजनीति का भद्र पुरुष" कहा जाता था; इसी से प्रेरित होकर गांधीजी ने उन्हें 'अजातशत्रु- जिनका कोई शत्रु नहीं होता' कहा था।

यह कहा गया है कि उनमें "जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणादायी वाक्पटुता, वल्लभभाई पटेल का कटु यथार्थवाद और राजगोपालाचारी की प्रखरता एवं वाद-विवाद कौशल का अभाव था।" फिर भी, एक प्रसिद्ध विधिवेत्ता, महान विद्वान, प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, संविधान सभा के

अध्यक्ष और इस गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में उनका योगदान महत्वपूर्ण था। उभरते हुए गणराज्य में लोकतांत्रिक आदर्शों को सुदृढ़ करने के लिए राष्ट्र उनका ऋणी है।

मित्रों,

अपने संपूर्ण जीवन में, और विशेषकर आजादी के बाद, राजेन्द्र प्रसाद ने गांधीजी के तौर-तरीकों एवं विवेकशीलता के प्रति अपनी दृढ़ आस्था बनाए रखी। वह गांधीजी के विश्वस्त सिपहसालार थे और उनका समर्पण गांधी जी के प्रति इतना अधिक व्यक्तिगत था जितना यह गांधीवादी सिद्धांतों के प्रति था। राष्ट्र के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में गांधीवादी सिद्धांतों से विचलन के सार्वजनिक प्रदर्शन ने उन्हें काफी परेशान किया। गांधी जी के निधन की ग्यारहवीं पुण्य तिथि पर बोलते हुए उन्होंने सार्वजनिक रुप से कहा था कि "क्या हम दिन प्रतिदिन उनकी हत्या नहीं कर रहे हैं।"

अतीत के किसी भी कालखण्ड की तुलना में आज का समय ऐसा है जिसमें किसी को किसी के जीवन में और राष्ट्र के सुशासन में चरित्र के महत्व पर राजेन्द्र बाबू द्वारा दिए गए बल का स्मरण कराया जाता है।

उनका मानना था कि "केवल पुस्तकें पढ़ने अथवा महान उपदेश सुनकर" चरित्र निर्माण नहीं किया जा सकता बल्कि "त्याग की भावना" और "स्वयं की अपेक्षा औरों को महत्व देकर तथा व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा समाज-सेवा को महत्व देकर" ऐसा किया जा सकता है।

नवम्बर, 1949 में संविधान सभा में दिए गए एक भाषण में उन्होंने कहा:

"यदि निर्वाचित गण सक्षम और चरित्रवान तथा सत्यनिष्ठ हों तो दोषपूर्ण संविधान के बावजूद वे बहुत अच्छा कार्य कर पाएंगे। यदि उनमें इन गुणों का अभाव है, तो संविधान से देश को कोई सहायता नहीं मिल सकती.......। जो स्वाधीनता हमने हासिल की है, उसकी रक्षा करना और निर्धन व्यक्तियों के लिए इसे लाभदायी बनाना हम पर निर्भर है। आइये, हम आत्मविश्वास,

सच्चाई और अहिंसा तथा सबसे बढ़कर मन-प्राण से एवं ईश्वर को ध्यान में रखते हुए अपने स्वतंत्र गणराज्य को संचालित करने के लिए यह नया उद्यम प्रारम्भ करें।"

सार्वजनिक जीवन, विशेषकर उच्च पदों पर भ्रष्टाचार की बढ़ती हुई घटनाओं ने उन्हें बेहद परेशान कर दिया था और वह इसको लेकर स्पष्टवादी थे। राष्ट्रपति के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान उन्होंने यह समझ लिया था कि न्यायिक हस्तक्षेप और राजनीतिक दृष्टांत भ्रष्टाचार से निपटने के लिए प्रमुख साधन हैं। उन्होंने दूरदर्शिता के साथ लिखा, "मैं समझता हूं समय आ गया है कि शीर्षस्तर से निचले स्तर तक सरकार इस पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दे और कुछ कार्रवाई करे जिससे इसका उपहास करने वाले और इस पर संदेह करने वाले भी भ्रष्टाचार, चाहे जब भी पाया जाए और जिस भी रूप में देखा जाए, का कड़ाई से निराकरण और दमन करने की इसकी प्रतिबद्धता के प्रति आश्वस्त होंगे।"

देवियो और सज्जनो,

उनके अपने शब्दों में, "विश्वास और दैनिक व्यवहार में एक सनातनवादी हिन्दू" होने के बावजूद, भारतीय धर्म निरपेक्षता के आदर्श में उनका दृढ़ विश्वास था और सभी धर्मों और पूजा स्थलों के प्रति उनका अटूट सम्मान था। उनका मानना था कि धार्मिक असहिष्णुता से "लोगों के बीच कटुता और अनैतिकता" बढ़ती है और यह कि "सभी रास्ते ईश्वर की ओर ले जाते हैं।" उन्होंने सभी नागरिकों से अनुरोध किया कि "एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता और सद्भावना रखें और इस देश में रह रहे सभी धर्मों के लोग यह महसूस करें कि उन सभी को यहां पर रहने और अपनी पसंद के धर्म को मानने का समान अधिकार है।"

उनकी प्रखर विद्वत्ता और अनेक भाषाओं में उनकी प्रवीणता तत्कालीन प्रतिष्ठित राजनेताओं के विशिष्ट समूह के बीच उन्हें अलग पहचान देती थी। उन्हें अंतिम गांधीवादी नेताओं में से उस एक नेता के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने मानवता की निःस्वार्थ सेवा करने और

सार्वजनिक जीवन में शुचिता और सत्यनिष्ठा के सर्वोच्च मानदंडों को अक्षुण्ण बनाए रखने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने राजनीति में कथनी और करनी के बीच संगम की आवश्यकता को रेखांकित किया और यह दर्शाया कि किस प्रकार कोई व्यक्ति विनीत, उदार और संपूर्ण तौर पर सज्जन होने के बावजूद एक प्रभावकारी राजनीतिज्ञ बन सकता है।

डा. राजेन्द्र प्रसाद का जीवन राजनीति में नैतिक आयामों को अक्षुण्ण बनाए रखने के एक उदाहरण के रूप में हमारे सामने है। उन्होंने एक बार कहा था कि लोगों में इतिहास की भावना एक महान राष्ट्रीय गुण है जो राष्ट्रों को महानता की ओर ले जाता है। यह मेरी उत्कट आशा है कि उनका जीवन और आचरण भारत, विशेषकर बिहार के युवाओं को प्रेरित करता रहे और स्वतंत्रता संग्राम के हमारे स्वयं के इतिहास की भावना को वापस लाए। हम जिन वर्षगांठों को आज मना रहे हैं वे ऐसा करने के लिए उपयुक्त अवसर हैं।

मैं एक बार फिर से नीतीश कुमार जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आज के समारोह में भाग लेने हेतु मुझे आमंत्रित किया।

****